« Предметные картинки в логопедической работе с детьми младшего школьного возраста»

Составила: Учитель – логопед: Харунжина О.А

Уважаемые коллеги!

Все мы знаем, что предметные картинки значительно облегчают труд учителя-логопеда. Это незаменимый, эффективный и доступный инструментарий любого детского специалиста. Игры с предметными картинками помогают: избежать скучного, но необходимого механического повторения речевого материала, превратить

занятие в игру, заинтересовывая тем самым ребят, разнообразить взаимодействие с детьми, эффективно решать коррекционные задачи. Для логопедических игр можно использовать любой набор предметных картинок. С помощью этого несложного инструментария учитель-логопед, может решать разнообразные коррекционно-

развивающие задачи:

* Уточнение, обогащение и активизация словаря ребѐнка;
* Формирование и совершенствование грамматического строя речи;
* Автоматизация звуков на уровне слов, словосочетаний, фразовой речи;
* Формирование навыков звукового анализа;
* Развитие слуховой, зрительной памяти;
* Развитие умственных способностей ребѐнка: умения систематизировать, сравнивать, устанавливать элементарные причинно-следственные связи.

Предлагаю вашему вниманию некоторые идеи, как использую я эти картинки в своей работе:

1. «Запомни и повтори». 10. « Назови одним словом»
2. «Чѐтко называй и картинки выбирай**».** 11. « Чья, чей, чьи?»
3. «Разложи по группам» 12. « Запоминай, переворачивай, называй»
4. «Что пропало?» 13. « Рассортируй по группам»
5. « Повторюшки» 14. « Придумай рассказ по серии картин»
6. « Назови, где картинка**»** 15**.** « Назови ласково»
7. « Найди ошибку» 16. « Чей детѐныш?»
8. « Что лишнее?» 17. « Разложи по цвету»
9. « Какай звук первый, а какой последний?» 18. « Где растѐт?» ………….

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

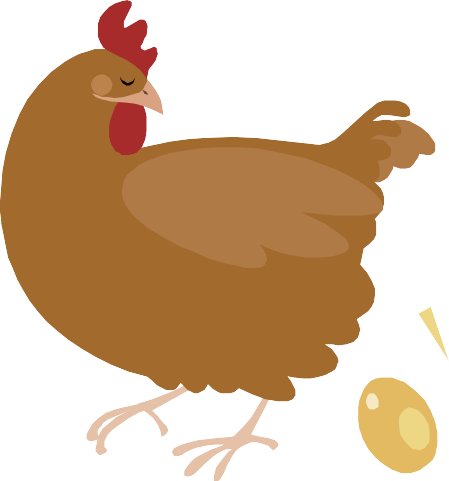
|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

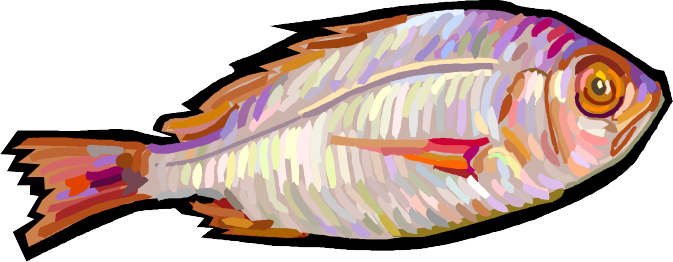




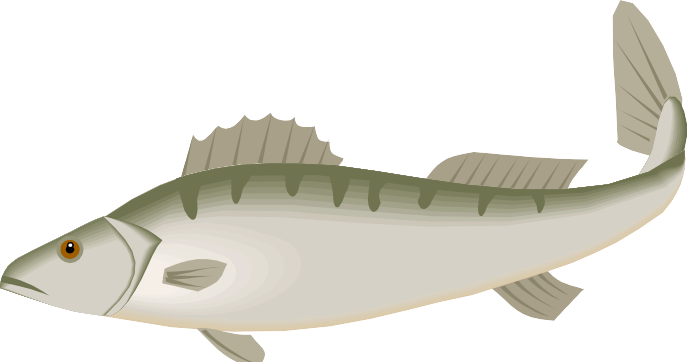
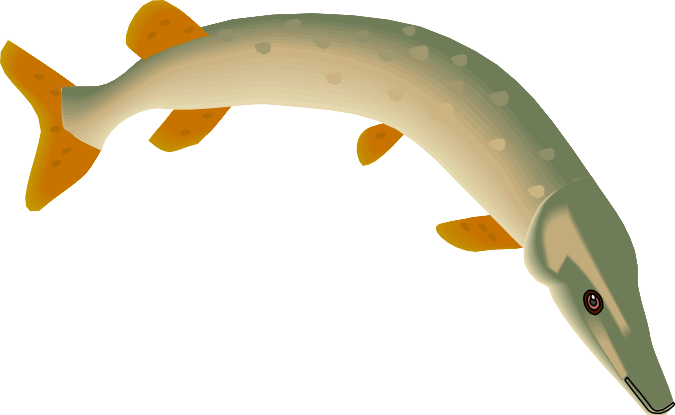
|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |







|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

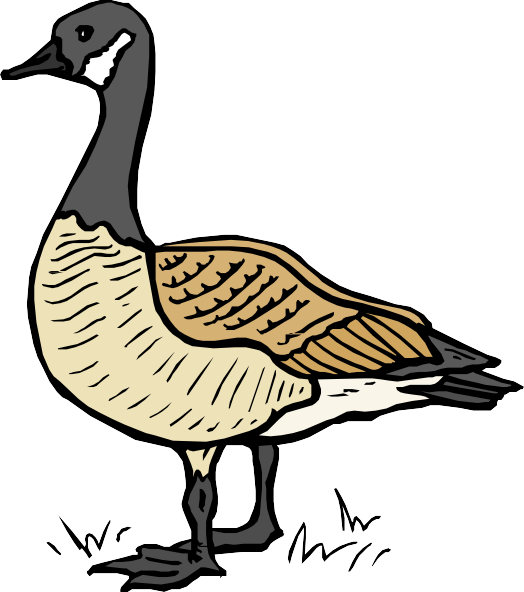
|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |



|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
|  |  |  |